AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 09 | October 2022| www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 48-52

झुन्झुनू जिले मे पर्यावरण अवनयन के कारण एवं निवारण के उपाय

डॉ.बंशीधर[1] एंव श्रीमती सविता[2]*

[1]सहाय्यक आचार्य-भूगोल विभाग, श्री श्रद्दानाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोडी (गुढा गौडजी) झुन्झुनू, राजस्थान.

[2]संशोधनकर्ता

सार:–

झुन्झुनू जिले में पर्यावरण पर बढती हुई जनसंख्या का भारी दबाव है जो क किसी हद तक असहनीय हो चला है। आज के युग में पर्यावरण के असंतुल के मुख्य कारण बढती हुई जनसंख्या है। जितनी अधिक जनसंख्या बढ रही है उतने ही अधिक स्तर पर खेती योग्य भूमी चाहए जिसके लिए अधांधुध पेड़ काटे जा रहे है।

प्रस्तावना:–

पर्यावरण मानव के जीवन का अभिन्न अंग हैं। मानव के जीवन को विकसित करने में पर्यावरण की भूमिका एक निर्माणकारी तत्व की हैं। यदि पर्यावरण नहीं होता तो मानव जीवन ही नहीं अपितु पादप व प्राणी जीव के जीवन की कल्पना करना भी दूभर था। संतुलित व मानव अनुकूल पर्यावरण ने प्रत्येक प्राणी को वे समस्त संसाधन उपलब्ध कराएं जो जीवन जीने के लिए अनिवार्य होते हैं। लेकिन एक समय के बाद मानवीय जीवन में हुई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति व तकनीकी घुसपैठ ने न केवल मानवीय जीवन की दिशा को परिवर्तित करके रख दिया अपितु पर्यावरण और प्रकृति का शुद्ध–सात्विक रूप भी काफ़ी हद तक विकृत कर दिया। कथित विकास को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में मनुष्य ने पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति पहुंचाने का कार्य किया हैं। यहां कथित विकास शब्द का प्रयोग इसलिए करना उचित होगा कि वास्तविक विकास का प्रतिमान कतई पर्यावरण अवनयन की इजाज़त नहीं देता है। इसके विपरीत आधुनिक कथित विकास तो पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण पर ही टिका है।

जिले में पर्यावरण अवनयन के कारण

पर्यावरण मानव के जीवन का अभिन्न अंग है। मानव के जीवन को विकसित करने में पर्यावरण की भूमिका एक निर्माणकारी तत्व की हैं। यदि पर्यावरण नहीं होता तो मानव जीवन ही नहीं अपितु पादप व प्राणी जीव के जीवन की कल्पना करना भी दूभर था। संतुलित व मानव अनुकूल पर्यावरण ने प्रत्येक प्राणी को वे समस्त संसाधन उपलब्ध कराएं जो जीवन जीने के लिए अनिवार्य होते हैं। लेकिन एक समय के बाद मानवीय जीवन में हुई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की प्रगति व तकनीकी घसु पैठ ने न केवल मानवीय जीवन की दिशा को परिवतिर्त करके रख दिया अपितु पर्यावरण और प्रकृति का शुद्ध–सात्विक रूप भी काफ़ी

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Banshidhar Assistant Professor Shree Shraddhanath PG College, Todi (Gudhagorji), Jhunjhunu. Rajasthan. Email: dr.jhajhria1978@gmail.com	

हद तक विकृत कर दिया। कथित विकास को प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा में मनुष्य ने पर्यावरण को सर्वाधिक क्षति पहंचु ाने का कार्य किया है। यहां कथित विकास शब्द का प्रयोग इसलिए करना उचित होगा कि वास्तविक विकास का प्रतिमान कतई पर्यावरण अवनयन की इजाज़त नहीं देता है। इसके विपरीत आधुनिक कथित विकास तो पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण पर ही टिका है।

झुन्झुनू जिले में पर्यावरण प्रदूषण के कारण:–

वस्तुत: झुंझुनू जिले में बहुत से ऐसे कारक पाए गए ह ै जिनके द्वारा उच्च स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण हो रहा है, जिले में पर्यावरण प्रदूषण के कारको निम्न बिन्दुओ के अंतर्गत विश्लेषित किया जा सकता है।

जल प्रदूषण

- वायु प्रदूषण
- भूमि प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण

जल प्रदूषण:–

जल समस्त प्राणियों के जीवन का आधार है। आधुनिक मानव सभ्यता के विकास के साथ जल प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। आद्यै ोगीकरण के कारण शहरीकरण की प्रवृत्ति दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। जो पहले गांव हुआ करते थे, वे अब विभिन्न उद्योगों की स्थापना के बाद शहरों में तब्दील हो रह े है। जिले में डीप बोरिंग निर्माण करते हुए वहां के भूमिगत जल का दोहन किया जा रहा है। उद्योगों के अत्यधिक निर्माण से उनसे निकलने वाले दूषित जल, बचे हुए, रसायन कचरा आदि को नालियों के रास्ते नदी में बहा दिया जाता है। झुंझुन ू जिले में वर्ष १९९५ में आसैत भूजल स्तर ३६ मीटर था जो वर्ष २०१० में गिरकर ४८ मीटर तक हो गया है। इससे विद्युत व्यय बढ़ गया है। नलकूप एवं कूप सूख गये है, एवं सूख रहे है। इससे गाँव में सिंचाई के साथ–साथ पेयजल संकट भी पैदा हो गया है। जनसंख्या वृद्धि आरै अन्य प्रकार की जल आवश्यकताओं में वृद्धि से झुंझुनू जिला अत्यधिक जल संकट की ओर अग्रसर हो रहा है।

अनियोजित सीवरेज लाईनों द्वारा भूजल प्रदूषण:–

झुन्झुनूं में बलूई मिट्टी होने के कारण निक्षालक (अन्त: स्पन्दन) की क्रिया तीव्र गति से होती है। जिस कारण शहर का भूमिगत जल प्रदूषित निरंतर प्रदूषित हो रहा है। झुन्झुनूं शहर व यहां स्थित आद्यै ोगिक क्षेत्र में किसी भी प्रकार की नदी नही होने के कारण शहर का घरेलू अपशिष्ट, आद्यै ोगिक अपशिष्ट, जल–मल को नदीयों में नही बहाया जाता जबकि इस दूषित जल को गड्ढों में तथा नवनिमिर्त तथा प्राकृतिक तालाबों में बहा दिया जाता है। इस प्रकार के जल में घूले रसायन पानी में घलु कर अन्त: स्पन्दन या निक्षालन अथवा रिसते जल के साथ भूमि की नीचे की परता ें में चले जाते है जिसके कारण भूमिगत जल का प्रदूषित होना आरम्भ हो जाता है।

जिले के आद्यै ोगिक क्षेत्र में जहां विभिन्न प्रकार के कारखाने स्थित है जिनमें रासायनिक खाद, कपड़े रंगने, शराब फक्ै ट्री, केमिकलों को जल के साथ बहा दिया जाता ह ै जिससे अन्तत: स्पन्दन होकर हानिकारक रसायनों का भूमिगत जल में मिलकर उसे प्रदूषित कर रहा है। इस प्रकार आद्यै ोगिक क्षेत्र के रासायनिक कारखानों से निकलने वाल े हानिकारक अपशिष्ट के कारण आस–पास के क्षेत्र में स्थित कुओं का जल प्रदूषित हो गया है।

मोडा पहाड़ क्षेत्र मे वायु प्रदूषण:–

जिले के मोड़ा पहाड़ी क्षेत्र में विभिन्न क्रेशरों द्वारा निरंतर वायु प्रदूषण को बढ़ावा दिया जा रहा है। मोड़ा पहाड़ क्षेत्र में लगभग ३६ से अधिक स्टोन क्रेशर व १५ से अधिक डामर प्लांट संचालित ह ै जो पर्यावरण के नियमो को दरकिनार कर चलायी जाती है। स्टोन क्रेशर ईकाइयो से निकलने वाली पत्थर की रफ्फी आसपास के क्षेत्र को प्रदूषित करती है। मोड़ा पहाड़ क्षेत्र में क्रेशर

ईकाइयों के चारो ओर सैकड़ो वर्षो से विभिन्न समुदायों एवं जातियों के लोग रहते है जिसमें अधिकतर गरीब व मजदूर तथा किसान है। अर्थात यह आबादी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में स्टोन क्रेशरों से निकलने वाली पत्थर की रफ्फी के कारण आसपास घरों में टी. बी., कैंसर, सिलिकोसिस जैसी बीमारिया फलै रही ह ै तथा इसके आसपास रहने वाल े गरीब लोगों का जीवन संकट में ह ै। माडो पहाड़ क्षेत्र में गरीब किसानों की कृषि भूमि ह ै आरै वही उनकी आजीविका का साधन क्रेशरों से निकलने वाली पत्थर की रफी से किसानों की जमीने बंजर हो रही है। जिससे उनकी आय का स्त्रोत बंद होने के कगार पर है। इस कारण बहुत से किसानों ने खेती करना बंद कर दिया है जो कृषि उत्पादन को प्रभावित करती है।

ईंट–भटट्ों व चूना भट्टों से वायु प्रदूषण:–

जिले में पिछले दो दषकों में ईंट भट्टों में काफी वृद्धि हुई है। यहाँ उपयुक्त मृदा, बेहतर अवसरंचना, बढती हुई मांग के कारण ईंट भटटों का विकास हुआ ह ै। कृशि से होने वाली आय की बजाय ईंट भटटों को भूमि किराये पर देने से किसानों को बेहतर प्रतिफल के चलते यहाँ भूमि भी आसानी से मिल जाती है। जिले में सोनासर, लालपुर आरै हसांसरी आदि गावों में ईंट भट्टे सर्वाधिक मात्रा में पाए जाते ह ै। ईंट भवन निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार है। बढ़ती मांग के कारण ईंट भट्ट ों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही ह ै। ये ईंट भटटे कमजारे तकनीक के कारण पर्यावरण प्रदूषण के कारण बन रहे है। ईंट भटटों में ईधन के अपूर्ण दहन के कारण निलम्बित कणीकीय पदार्थों का निश्कासन होता है ये पदार्थ ष्वसन नली में प्रवेष कर फफे ड़ों एवं ष्वसन तत्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते ह ै। ईंट भटटों से निकली सल्फरडाई ऑक्साईड गैस भी ष्वसन तत्र को प्रभावित करती है।

भूमि प्रदूषण:–

भूमि समस्त जीवों को रहने का आधार प्रदान करती है। यह भी प्रदूषण से अछूती नही ह ै। जनसंख्या वृद्धि के कारण मनुष्य के रहने का स्थान कम पड़ता जा रहा है, जिससे वह वनों की कटाई करते हुए अपनी जरूरत को पूरा कर रहा ह ै। वनों की निरंतर कटाई से न केवल वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही ह ै आरै ऑक्सीजन की मात्रा घट रही ह ै, बल्कि जमीन में रहने वाले जीव–जंतुओं का भी संतलु न बिगड़ रहा ह ै।

रासायनिक खाद का विवरण:–

तालिका संख्या ४.१: जिले में रासायनिक खाद का वितरण (मै. टन)

वर्ष/केन्द्र	नाइर्टोजन	फॉस्फेटिक	पोटेशियम
	(अमोनियम सल्फेट के रूप में)	सुपर फॉस्फेट के रूप में	
२०१४–१५	७५३५	२०९०	२००
२०१५–१६	३०२५०	२२३२	१८२
२०१६–१७	११०२५	२५१०	३७०
२०१७–१८	१२५३०	२६१५	४५०
२०१८–१९	१२७५०	२८००	३७०
२०१९–२०	१३०२०	२९१७	३८५

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, झझुं ुनू–२०२०

उपरोक्त तालिका में झुंझुनू जिले में विभिन्न प्रकार की रासायनिक खाद के उपयोग के वितरण को दशार्या गया है जिस कारण से जिले में निरंतर भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास हो रहा है जो भूमि एवं मृदा प्रदूषण का कारण बन रहा है। तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिले में कृषि क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के रसायनो का उपयोग बढ़ा है यथा नाइट्रोजन, पोटेशियम, एवं फास्पोटिक आदि का उपयोग बड़े पैमाने पर जिले में किया जा रहा है जिसके कारण जिले में भूमि निरंतर प्रदूषित रही है।

ध्वनि प्रदूषणः— स्टोन कटींग मशीन से ध्वनि प्रदूषणः—

झुन्झुनूं शहर में गत वर्षों में प्रतिवर्ष ध्वनि का स्तर दो डेसीबल प्रतिवर्ष की वृद्धि हो रही है। जिससे यातायात के अतिरिक्त विभिन्न उद्योग जैसे स्टोन कटींग, छपाई की मशीनें, विभिन्न उद्योगों में चलने वाली मशीनों, कबाड़ी बाजार में पुराने लोहे के सामान को तोड़ने की आवाज व विभिन्न वाहनों की डेन्टिंग निकालने से उत्पन्न ध्वनि आदि के ध्वनि स्तर में वृद्धि हुई हैं इस प्रकार विभिन्न प्रकार के उद्योगों में प्रयुक्त की जाने वाली मशीनों में विभिन्न कल पुर्जो के घषर्ण के कारण ध्वनि के स्तर में वृद्धि हो रही है।

तालिका संख्या ४.२: झुन्झुनूं जिले में विभिन्न मशीनों एवं उद्योगों द्वारा ध्वनि प्रदूषण का स्तर

क्र.सं.	उद्योग के नाम	ध्वनि का स्तर (डेसिबल में)
१.	आटा मिल उद्योग	८०—१०८
२.	माबर्ल कटिंग उद्योग	८०—१०८
३.	ग्रेनाइर्ट कटिंग उद्योग	६६—१०२
४.	चोखट कटिंग उद्योग	५६
५.	स्टील एवं बिल्डिंग उद्योग	५०
६.	डेंटिगं —पेंटिगं उद्योग	५६—९९
७.	स्टोन क्रेशर	७०—१०८
८.	लकड़ी चिराई उद्योग	५६—१०२

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, झझुंनू—२०२०

औधोगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषणः—

तालिका संख्या ४.३: झुन्झुनूं जिले में पंजीकृत उद्योगों की संख्या

क्र.स	उद्योगों की श्रेणी	उद्योगों की संख्या	रोजगार
१.	चर्म आधारित	२३५२	५४०
२.	वस्त्र आधारित	१२६५	४०७०
३.	विविध उत्पाद	१०७०	३७४२
४.	खाद्य आधारित	९२८	
५.	नोन मैटलिक	९१८	३३७५
६.	खनिज आधारित	८५५	१०८७३
७.	वन आधारित	८७०	१०१४२
८.	धातु आधारित	६५१	

९.	मशीनरी एवं मशीन टूल्स आधारित	६०७	३४९६
१०.	रबर प्लास्टिक एवं रसायन आधारित	२४७	२५९६

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, झझुं नू–२०२०

कच्ची प्लास्टिक के पिंघलने से जो गैसे (काबर्न डाईऑक्साइड, मिथेन, कार्बनडाई सल्फर) भारी मात्रा में उत्सजिर्त होती ह ै जो किसी भी स्वच्छ वायु में घलु कर उसे प्रदूषित कर दी है। इसी प्रकार जिले में आद्यै ोगिक क्षेत्र में कॉटन उद्योग भी संचालित है। जहां रजाई व गद्दो ंव तकियो ं का निमार्ण ा किया जाता है। इन उद्योगों में रूई की गांठें आती है जिन्ह ेदबाव के द्वारा कई किलोग्राम रूई की गांठें बनाइ ं जाती है जब गद्दे व रजाई का निर्माण किया जाता है तो उसकी सफाइ ं व पिनाइ ं की जाती है। इस प्रक्रिया में रूई मिली हुई मिट्टी व रूई के छोटे–छोटे उड़ते है जो आस–पास के वातावरण में घुल कर उसे प्रदूषित करते है।

निष्कर्ष:–

औधोगिक विकास औधोगिक क्रांति ही थ्थी, जिसने पर्यावरण प्रदुषण को जन्म दिया। बड़ी बड़ी फैक्टिरियों के विकास और कोयला और अन्य जीवाश्म ईंधन के बहुत अधक मात्रा में उपभोग के कारण अप्रत्याशित रूप से प्रदूषण बढा है।

संदर्भ:

1. Chora K., Gulati S.C. (2001)–Migration, Common Property Resources and Environmental degradation-inter-linkege in India"s Arid and Semi-Arid Regions, Published by- Sage Publications new Delhi.
2. Choudhary A.B. (2007) Forests, Environment and Man, Dya Publishing house- Delhi.
3. Chouhan A. S. (2007) – Society and Environment – Jain brothers, New Delhi.
4. Divan S. Rosen cranz A. (2002)- Environment law and Policy in India (2nd edition) Cases, materials and status- oxford university press.
5. Edward F. Bergman, William H. Renwik, T. Vasantha Kumaran (2008) Introduction to Geography- people, places and Environment – Darling Kindersley (India) (p) Ltd.
6. Frederick, K.D., & Major, D.C. (2004) Climate Change and Water Resources. In Toman, M.A., & Sohngen, B., (Eds.), (2004): Climate Change. The International Library of Environmental Economics and Policy, Ashgate Publishing Company Burlington, 41-57.
7. Global Change, (2020) : Climate Models, Scenarios and projections. Retrieved from https://science2017.globalchange.gov/chapter/4/ Consulted on June 10, 2020
8. Goutam A. (2007)- Environment Geography – Sharda Pustak Bhawan, Allahabad.
9. Gupta P. K. (2000) – Methods in Environmental Analysis – Water, Soils and Air- Agrobies (India), Jodhpur.
10. Hanumantha Rao C. H. (2008)- Agricultures, food Security, Poverty and Environment Eassy on Post Reform (India). Oxford University Press, India.
11. Khan I. (2016) - A geographical Analysis of Increasing population and environmental problems- A case study of Jhunjhunu District. (Ph.D Thesis)
12. Kumar H. D. (2008) – Energy and Natural Resources- Sustainability and Management- Vitasta Publication (P) Ltd., New Delhi

■ ■ ■